पाठ 3

अकारान्त पुंलिंग, नपुंसकलिंग और आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाओं तथा अस्मद्, युष्मद्, तद्, एतद् सर्वनामों के प्रथमा (कर्ता कारक) और षष्ठी विभक्ति (संबंध कारक) के रूप.

टिप्पणी: इस पाठ से हम प्रत्येक अनुभाग के विषय की पहचान के लिए कुछ चिह्नों का प्रयोग करेंगे। जिस अनुभाग की संख्या के बाद **सं.** लिखा हो वह **संज्ञा** से संबंधित होगा। इसीप्रकार जिन अनुभागों की संख्या के बाद **सर्व.**, **वि.** और **क्रि.** लिखा होगा वे क्रमशः **सर्वनाम**, **विशेषण** और **क्रिया** से संबंधित होंगे। **संधि** से संबंधित अनुभाग की संख्या के बाद **संधि.**, और **उपसर्ग**, **प्रत्यय**, **समास**, कारक आदि सामान्य विषयों से संबंधित अनुभागों की संख्या के बाद **सा.** (सामान्य) लिखा होगा। **व्याकरणिक अभ्यास** के अनुभाग **अ.** और पठन अभ्यास के अनुभाग **प.** से चिह्नित होंगे।

3.1 सं. संस्कृत में संज्ञाओं के मूल रूप को **प्रातिपदिक** कहते हैं। प्रातिपादिक से वाक्य में प्रयुक्त होने वाली संज्ञा के अलग-अलग विभक्तियों और वचनों में रूप बनाए जाते हैं, जिन्हें **पद** कहते हैं। वाक्यों में पदों का प्रयोग होता है, प्रातिपादिक का नहीं।। उदाहरण के लिए **बालक** शब्द प्रातिपदिक है जिससे **बालकः**, **बालकस्य** और **बालकानाम्** आदि पद बनते हैं। जिनका वाक्यों में प्रयोग होता है। संस्कृत में तीन लिंग और तीन वचन होते हैं। हिन्दी में संज्ञाओं के दो ही लिंग होते हैं, **पुंलिंग** और **स्त्रीलिंग।** संस्कृत में इन दोनों के अतिरिक्त **नपुंसकलिंग** भी होता हैं। इसीप्रकार हिन्दी में केवल दो वचन, **एकवचन** और **बहुवचन**, होते हैं किन्तु संस्कृत में दो वस्तुओं या व्यक्तियों को बताने के लिए **द्विवचन** का भी प्रयोग होता है।

वाक्य में संज्ञा और क्रिया के या दो संज्ञाओं के परस्पर संबंध को बताने के लिए संज्ञा के विभिन्न रूपों का प्रयोग होता है। इन रूपों को सात विभक्तियों में बाँटा गया है जिन्हें क्रमशः **प्रथमा**, **द्वितीया**, **तृतीया**, **चतुर्थी**, **पंचमी**, **षष्ठी** और **सप्तमी** विभक्ति कहते हैं। इन सात विभक्तियों में **एकवचन**, **द्विवचन** और **बहुवचन** के आधार पर किसी संज्ञा के 21 रूप हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त संज्ञाओं की **आठवीं** विभक्ति **संबोधन** होती है जिसके रूप एकवचन को छोड़कर प्रथमा विभक्ति के समान होते हैं।

किसी संज्ञा के रूप कैसे चलेंगे यह इस बात पर निर्भर करता है कि वह संज्ञा किस लिंग की है और उसके अन्त में कौन-सी ध्वनि है। अकारान्त (जिनके अंत में '**अ**' हो) पुंलिंग संज्ञाओं के रूप एक ही प्रकार से चलते हैं। इसीप्रकार जिन स्त्रीलिंग संज्ञाओं के अंत में '**आ**' हो उनके रूप एक प्रकार से चलते हैं। **बालक** अकारांत पुंलिंग संज्ञा है, **बालिका** आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा है और **वन** अकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञा है। **बालक**, **बालिका** और **वन** संज्ञाओं के प्रथमा विभक्ति

(कर्ताकारक) में रूप निम्नलिखित हैं:

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
पुंलिंग	**बालक:**	**बालकौ**	**बालका:**
स्त्रीलिंग	**बालिका**	**बालिके**	**बालिका:**
नपु. लिंग	**वनम्**	**वने**	**वनानि**

3.2 सं. प्रथमा विभक्ति (कर्ताकारक) का प्रयोग सामान्यतः कर्तृवाच्य की क्रिया के कर्ता के लिए किया जाता है। नीचे तीनों लिंगों की कुछ ऐसी संज्ञाएँ दी गई हैं जिनके रूप **बालक**, **बालिका** और **वन** की तरह चलते हैं। यहाँ उनके प्रथमा विभक्ति, एकवचन के रूप दिए गए हैं। आप इनके प्रथमा विभक्ति में द्विवचन और बहुवचन के रूप बनाइए। (हम प्रायः संज्ञाओं के रूप प्रथमा विभक्ति, एकवचन में देंगे ताकि आप उनके अंत से उनके लिंग का अनुमान कर सकें, लेकिन यह ध्यान में रखना होगा कि संज्ञाओं का मूल प्रातिपदिक रूप उनके प्रथमा विभक्ति, एकवचन रूप से प्रायः भिन्न होता है।)

पुंलिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
पाठ:	**कक्षा**	**पुस्तकम्**
विद्यालय:	**वाटिका**[1]	**पत्रम्**
शिक्षक:	**लता**[2]	**गृहम्**
छात्र:[3]	**चटका**[4]	**फलम्**
ईश्वर:	**नौका**[5]	**चित्रम्**
वृक्ष:	**माला**	**सूत्रम्**[6]

(**शब्दार्थ**: 1. बगीचा, 2. बेल, 3. विद्यार्थी 4. चिड़िया, 5. नाव, 6. सूत्र, धागा)।

3.3 संधि. संस्कृत में संधि के एक नियम के अनुसार यदि एक ही शब्द में **ऋ**, **ॠ**, **र्** या **ष्** के बाद (कुछ अन्य ध्वनियों के बीच में होते हुए भी) **न्** आए तो **न् ण्** में बदल जाता है। इस नियम के अनुसार ऊपर दिए गए नपुंसकलिंग शब्दों के बहुवचन के रूप क्रमशः इस प्रकार होंगे: **पुस्तकानि**, **पत्रणि**, **गृहाणि**, **फलानि**, **चित्राणि**, **सूत्राणि।**

3.4 सं षष्ठी विभक्ति का प्रयोग दो संज्ञाओं या सर्वनामों के बीच संबंध दिखाने के लिए होता है, (जैसे- **बालकस्य चित्रम्**- बालक का चित्र)। उपर्युक्त तीन प्रकार की संज्ञाओं के षष्ठी विभक्ति में रूप निम्नलिखित हैं:

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
पुंलिंग	**बालकस्य**	**बालकयो:**	**बालकानाम्**
स्त्रीलिंग	**बालिकाया:**	**बालिकयो:**	**बालिकानाम्**
नपु. लिंग	**वनस्य**	**वनयो:**	**वनानाम्**

टिप्पणी: आधुनिक व्याकरणों में शब्द-रूपों को बताने के लिए प्रायः कारक शब्द का

प्रयोग होता है। विभक्ति और कारक में कुछ अंतर है। कभी-कभी एक विभक्ति का प्रयोग एक से अधिक कारकों के लिए, और एक कारक के लिए एक से अधिक विभक्तियों का प्रयोग होता है। क्योंकि मोटे तौर पर एक विभक्ति का प्रयोग एक ही कारक को बताने के लिए होता है इसलिए सुविधा के लिए विभक्ति और कारक शब्दों का प्रयोग एक दूसरे के स्थान पर कर लिया जाता है। कारक का प्रयोग संज्ञा और क्रिया के बीच के संबंध को बताने के लिए होता है। षष्ठी विभक्ति का प्रयोग दो संज्ञाओं के बीच संबंध बताने के लिए होता है, इसलिए षष्ठी विभक्ति वास्तव में कारक विभक्ति नहीं है पर सुविधा के लिए इसे संबंधकारक कह दिया जाता है।

3.5 प. नीचे दिए वाक्यांशों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए।

1. बालकस्य पुस्तकम्। 2. बालिकाया: माला। 3. विद्यालयस्य छात्रा:। 4. वनस्य वृक्षा:। 5. पुस्तकस्य चित्राणि। 6. पुस्तकानां पाठा:। 7. विद्यालयस्य शिक्षका:। 8. बालकयो: पुस्तकानि। 9. ग्रामस्य[1] बालिका:। 10. वृक्षस्य पत्राणि। 11. लतानां पुष्पाणि। 12. वृक्षाणां फलानि। 13. मालाया: सूत्रम्। 14. चटकाया: चित्रम्। 15. ईश्वरस्य भक्त:। 16. बालिकयो: गृहम्। 17. गृहस्य द्वारम्[2]। 18. बालिकानां माला:।

(**शब्दार्थ**:- 1. गाँव की, 2. दरवाज़ा)

3.6 सर्व. पुरुषवाचक सर्वनाम. पुरुषवाचक सर्वनामों में उत्तम पुरुष और मध्यम पुरुष में लिंग के कारण कोई अन्तर नहीं पड़ता, अर्थात् जिन सर्वनामों का पुंलिंग में प्रयोग होता है। स्त्रीलिंग में भी उन्हीं सर्वनामों का प्रयोग होता है। किन्तु प्रथम पुरुष (अन्य पुरुष) के सर्वनामों के तीनो लिंगों के रूप अलग-अलग होते हैं।

उत्तम पुरुष के सर्वनामों का सामान्य नाम **अस्मद्** है। **अस्मद्** के प्रथमा और **षष्ठी** विभक्तियों के रूप निम्नलिखित हैं:

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	**अहम्**	**आवाम्**	**वयम्**
षष्ठी	**मम** (मे)	**आवयो:** (नौ)	**अस्माकम्** (न:)

टिप्पणी:–कोष्ठक में दिए गए षष्ठी विभक्ति के वैकल्पिक रूपों का प्रयोग बहुत कम होता है।

3.7 संधि. यदि किसी शब्द के अन्त में **म्** आए और उसके बाद व्यंजन से आरम्भ होने वाला कोई शब्द हो तो **म्** के उच्चारण में कुछ अंतर आ जाता है। तब इसे **अनुस्वार** कहते हैं और इसे **म्** से पूर्व के अक्षर पर बिन्दी लगाकर लिखते हैं। यदि **म्** ध्वनि वाक्य के अन्त में आए या इसके बाद स्वर से आरम्भ होने वाला कोई शब्द हो तो इसमें कोई परिवर्तन नहीं होता। उदाहरण के लिए **अस्माकम् ईश्वर:** और **मम पुस्तकम्** लिखा जाएगा। किन्तु व्यंजन से पूर्व **अस्माकं विद्यालय:** और **अहं शिक्षक:** लिखा जाएगा ।

3.8 प. नीचे लिखे वाक्यों को पढ़िए और उनका हिन्दी में अनुवाद कीजिएः

1. अहं छात्रः। 2. सः मम शिक्षकः। 3. तत्र अस्माकं विद्यालयः। 4. अहं बालिका। 5. एतत् मम पुस्तकम्। 6. वयं बालकाः। 7. एतत् अस्माकं गृहम्। 8. एतत् गृहस्य द्वारम्। 9. एषा अस्माकं वाटिका। 10. तत्र अस्माकं मन्दिरम्। 11. वयम् ईश्वरस्य भक्ताः। 12. आवां बालिके। 13. एषा आवयोः माता। 14. सः आवयोः पिता।

3.9 सर्व. मध्यम पुरुष के सर्वनामों का सामान्य नाम **युष्मद्** है। इसके **प्रथमा** और **षष्ठी** विभक्तियों के रूप निम्नलिखित हैंः

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	**त्वम्**	**युवाम्**	**यूयम्**
षष्ठी	**तव** (ते)	**युवयोः** (वाम्)	**युष्माकम्** (वः)

टिप्पणीः– **अस्मद्** की तरह **युष्मद्** के कोष्ठक में दिए गए षष्ठी विभक्ति के वैकल्पिक रूपों का प्रयोग भी बहुत कम होता है।

3.10 अ. इन वाक्यों को पढ़िए और उनका हिन्दी में अनुवाद कीजिएः

1. त्वं छात्रः। 2. सः तव शिक्षकः। 3. अत्र तव पुस्तकानि। 4. यूयम् अपि छात्राः। 5. तत्र युष्माकं विद्यालयः। 6. त्वं बालिका। 7. एतत् तव पुस्तकम्। 8. यूयं बालकाः। 9. एषा युष्माकं वाटिका। 10. तत्र युष्माकं गृहम्। 11. युवां बालिके। 12. सा युवयोः माता। 13. सः युवयोः पिता। 14. सा तव माला। 15. एषा माला मम।

3.11 सर्व. दूर के व्यक्तियों या वस्तुओं के लिए प्रथम पुरुष के सर्वनामों का नाम **तद्** है। इसके तीनों लिंगों में प्रथमा और षष्ठी में रूप नीचे दिए हैंः

	पुंलिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
प्र.	**सः तौ ते**	**सा ते ताः**	**तत् ते तानि**
ष.	**तस्य तयोः तेषाम्**	**तस्याः तयोः तासाम्**	**तस्य तयोः तेषाम्**

3.12 सर्व. निकटवर्ती व्यक्तियों या वस्तुओं को बताने वाले अन्य पुरुष के सर्वनामों का सामान्य नाम **एतद्** है। **तद्** के रूपों के पहले **ए** जोड़कर **एतद्** के रूप बनाए जा सकते हैं। किन्तु पुंलिंग और स्त्रीलिंग के प्रथमा विभक्ति एकवचन में इसके रूप क्रमशः **एषः** और **एषा** होते हैं। **एतद्** सर्वनाम के प्रथमा और षष्ठी विभक्तियों में रूप क्रमशः निम्नलिखित हैंः

	पुंलिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
प्र.	**एषः एतौ एते**	**एषा एते एताः**	**एतत् एते एतानि**
ष.	**एतस्य एतयोः एतेषाम्**	**एतस्याः एतयोः एतासाम्**	**एतस्य एतयोः एतेषाम्**

3.13 अ. नीचे दी हुई संज्ञाओं में जो प्रथमा विभक्ति में हैं उनके साथ कोष्ठक में **प्र** और जो षष्ठी विभक्ति में हैं उनके साथ कोष्ठक में **ष** लिखिए:

बालक:( ), बालकस्य( ), बालिका:( ), बालिकयो: ( ), पत्रम् ( ), पुस्तकानि( ), वनानाम्( ), वनयो: ( ), वने( ), लताया: ( ), बालकौ( ), विद्यालया: ( ), मालानाम्( ), बालिके( ), पाठयो: ( )।

3.14 अ. नीचे दिए सर्वनामों में जो प्रथमा विभक्ति में हैं उनके साथ कोष्ठक में **प्र**, और जो षष्ठी विभक्ति में हैं उनके साथ कोष्ठक में **ष** लिखिए:

स: ( ), तस्य( ), ते ( ), तेषाम्( ), अहम्( ), अस्माकम्( ), आवयो: ( ), मम( ), त्वम्( ), यूयम्( ), एष: ( ), सर्वेषाम्( ), एतत्( ), एतस्या: ( ), एता: ( ), वयम्( ), आवाम्( ), तव( ), तौ ( ), एते( ), तयो: ( )।

टिप्पणी: अन्य पुरुष के सर्वनाम निर्देशक विशेषणों का काम भी करते हैं। उनका प्रयोग संज्ञाओं से पूर्व व्यक्तियों, वस्तुओं या स्थानों की ओर संकेत करने के लिए भी होता है। **स: जन: मम शिक्षक:**— वे सज्जन मेरे अध्यापक हैं।

3.15 प. नीचे दिए वाक्यों को पढ़िए और उनका हिन्दी में अनुवाद कीजिए:

1. तत् तव पुस्तकम्। 2. एतत् पुस्तकं मम। 3. तानि चित्राणि तव। 4. एतानि चित्राणि मम। 5. सा तव वाटिका। 6. एषा मम वाटिका। 7. ते तव वाटिकाया: वृक्षा:। 8. एते मम वाटिकाया: वृक्षा:। 9. तानि युष्माकं पुस्तकानि। 10. एतानि अस्माकं पुस्तकानि। 11. एतानि अस्माकं पुस्तकानां चित्राणि। 12. ता: अस्माकं ग्रामस्य बालिका:। 13. एतानि तासां चित्राणि। 14. एता: तासां माला:। 15. ते बालका: युष्माकं विद्यालयस्य छात्रा:। 16. एष: जन: तेषां शिक्षक:। 17. एतत् तस्या: बालिकाया: गृहम्। 18. एते अस्माकं ग्रामस्य बालका:। 19. एतानि मम पत्राणि। 20. तानि पत्राणि तव।

3.16 अ. वाक्य के सामने लिखे शब्दों में से सही शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए:

1. ..... बालिका मम भगिनी।	त्वम्, एते, एषा, यूयम्
2. .....अस्माकं शिक्षकाः।	ते, तौ, सः, तस्य
3. एतानि तेषां .....।	चित्रम्, चित्रो, चित्राणि
4. .....ईश्वरस्य भक्ताः।	अहम्, वयम्, त्वम्, एषा
5. .....तेषां गृहम्।	आवयोः, मम, तव, तत्
6. तानि मम .....।	पुस्तकम्, पुस्तकानि, पुस्तके
7. ते .....वृक्षाः।	वनम्, वाटिका, वनस्य

8. सा ..... माला। ताः, एताः, तस्याः, तौ

9. तव पिता ..... शिक्षकः। त्वम्, युवाम्, मम, वयम्

10. एतत् ..... पुस्तकम्। अस्माकम्, तानि, यूयम्, ते

अभ्यासों के उत्तर

3.5 **1.** लड़के की पुस्तक। **2.** लड़की की माला। **3.** विद्यालय के छात्र। **4.** वन के पेड़। **5.** पुस्तक के चित्र। **6.** पुस्तकों के पाठ। **7.** विद्यालय के अध्यापक। **8.** (दो) लड़कों की पुस्तकें। **9.** गा(व की लड़कियाँ। **10.** पेड़ के पत्तो। **11.** बेलों के फूल। **12.** पेड़ों के फल। **13.** माला का धागा। **14.** चिड़िया का चित्र। **15.** ईश्वर का भक्त। **16.** (दो) लड़कियों का घर। **17.** घर का द्वार। **18.**लड़कियों की मालाएँ।

3.8 **1.** मैं विद्यार्थी हूँ। **2.** वे मेरे अध्यापक हैं। **3.** वहाँ हमारा विद्यालय है। **4.** मैं लड़की हूँ। **5.** यह मेरी पुस्तक है। **6.** हम लड़के हैं। **7.** यह हमारा घर है। **8.** यह घर का द्वार है। **9.** यह हमारा बगीचा है। **10.** वहाँ हमारा मन्दिर है। **11.** हम ईश्वर के भक्त हैं। **12.** हम (दोनों) लड़कियाँ हैं। **13.** ये हमारी (हम दोनों की) माता जी हैं। **14.** वे हमारे (हम दोनों के) पिता जी हैं।

3.10 **1.** तुम विद्यार्थी हो। **2.** वे तुम्हारे अध्यापक हैं। **3.** तुम्हारी पुस्तकें यहाँ हैं। **4.** तुम (सब) भी विद्यार्थी हो। **5.** तुम्हारा विद्यालय वहा(है। **6.** तुम लड़की हो। **7.** यह तुम्हारी पुस्तक है। **8.** तुम (सब) लड़के हो। **9.** यह तुम्हारा बगीचा है। **10.** तुम्हारा घर वहा(हैं। **11.** तुम दोनों लड़कियाँ हो। **12.** वे तुम्हारी (तुम दोनों की) माता जी हैं। **13.** वे तुम्हारे (दोनों के) पिता जी हैं। **14.** वह तुम्हारी माला है। **15.** यह माला मेरी है।

3.13 प्रथमा-बालकः, बालिकाः, पत्रम्, पुस्तकानि, वने, बालकौ, विद्यालयाः, बालिके। षष्ठी-बालकस्य, बालिकयोः, वनानाम्, वनयोः, लतायाः, मालानाम्, पाठयोः।

3.14 प्रथमा-सः, ते, अहम्, त्वम्, यूयम्, एषः, एतत्, एताः, वयम्, आवाम्, तौ, एते।

षष्ठी-तस्य, तेषाम्, अस्माकम्, सर्वेषाम्ः, मम, एतस्याः, आवयोः, तव, तयोः।

3.15 **1.** वह तुम्हारी पुस्तक है। **2.** यह पुस्तक मेरी है। **3.** वे चित्र तुम्हारे हैं। **4.** ये चित्र मेरे हैं। **5.** वह तुम्हारा बगीचा है। **6.** यह मेरा बगीचा है। **7.** वे तुम्हारे बाग के पेड़ हैं। **8.** ये मेरे बाग के पेड़ हैं। **9.** वे तुम्हारी पुस्तकें हैं। **10.** ये हमारी पुस्तकें हैं। **11.** ये हमारी पुस्तकों के चित्र हैं। **12.** वे हमारे गाँव की लड़कियाँ हैं। **13.** ये उनके चित्र हैं। **14.** ये उनकी मालाएँ हैं। **15.** वे लड़के तुम्हारे विद्यालय के विद्यार्थी हैं। **16.** यह व्यक्ति उनके अध्यापक हैं। **17.** यह उस लड़की का घर है। **18.** ये हमारे गाँव के लड़के हैं। **19.** ये मेरे पत्र हैं। **20.** वे पत्र तुम्हारे हैं।

3.16 **1.** एषा, **2.** ते, **3.** चित्राणि, **4.** वयम्, **5.** तत्, **6.** पुस्तकानि, **7.** वनस्य, **8.** तस्याः, **9.** मम, **10.** अस्माकम्।